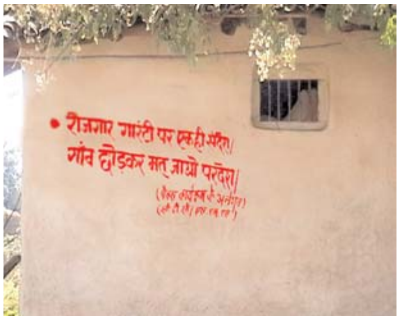

PACS
Madhya Pradesh & Chhatisgarh

Press Clippings

देहाती गरीबों में आत्मविश्वास जगा रहा है पैक्स

किसी भी विकास कार्यक्रम की सफलता केवल उसके नतीजों से नहीं आंकी जा सकती। बल्कि यह भी देखना होता है, कि वह कार्यक्रम कितना टिकाऊ साबित होता है और वह बदलाव की तरंगें पैदा कर सकता है या नहीं।

ब्रिटेन सरकार के अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग (डीएफआईडी) द्वारा चलाया जा रहा पुअरेस्ट एरिया सिविल सोसायटी (पैक्स) कार्यक्रम इस मायने में बिल्कुल कामयाब रहा है, क्योंकि इसमें विकास की कोई योजना ऊपर से थोपने के बजाय लोगों के क्षमता निर्माण और आत्मनिर्भरता के बारे में उन्हें जागरूक बनाने पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

दक्षिणी मध्यप्रदेश के 4 जिलों के साढ़े 4 सौ गांवों में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वूमन, चाइल्ड एण्ड यूथ डेवलपमेंट नी स्वैच्छिक संस्थाओं के सहयोग से पैक्स कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। इनमें से एक संस्था 'प्रदीपन' की रेखा गुर्जर का कहना है, कि पैक्स की वजह से गावों में पलायन काफी कम हो गया है। लगभग 70 फीसदी ग्रामवासी अपनी छोटी मोटी आर्थिक आवश्यकताओं के लिये अबह महाजन पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि वे परस्पर सहयोग से ही इसे पूरा कर लेते हैं। 'प्रदीपन' बैतूल जिले के जिन 30 गांवों में काम कर रही है, वहां लगभग 3 सौ महिलाओं ने मोमबत्ती, अगरबत्ती, मुर्गीपालन, च्यवनप्राश, अनाज और महुआ जैसे अपने व्यवसाय शुरू कर दिये हैं।

इसी तरह छिंदवाड़ा जिले के सौंसर विकासखण्ड में काम कर रही ग्रामीण आदिवासी समाज विकास संस्था के शामराव धवले के अनुसार गांव के लोगों में आश्चर्यजनक बदलाव आया है। चूंकि वे गरीब हैं, और गांवों में रहते हैं, इसलिये हम उन्हें बुद्धिमान नहीं मानते। यह सही है कि उनमें जागरूकता का अभाव है, लेकिन उन्हें समझाये जाने पर वे तुरंत चीजों को आत्मसात कर लेते हैं। आश्चर्यतो तब होता है, जब व

किसी चीज को समझने के बाद उस पर मनन करते हैं और फि र

बिलकुल अनोखे सुझाव लेकर आते हैं। लेकिन पैक्स कार्यक्रम की इससे भी बड़ी सफलता यह है, कि जिन इलाकों में यह चल रहा है, उनके बाहर भी लोग इससे प्रेरणा ले रहे हैं। वे खुद अपने समूह बनाने लगे हैं और ग्राम सभायें आयोजित करने लगे हैं। शामराव धवले के मुताबिक उन्होंने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सबके लिये खोल दिया है, ताकि पैक्स क्षेत्रों से बाहर के लोग भी उनमें शामिल हो सकें और आत्मनिर्भरता की भावना दूर- दूर तक फैल सके। पैक्स और दूसरे विकास कार्यक्रमों में सबसे बड़ा फर्क समझ और कार्यक्रम लागू करने के तौर तरीकों का है। कोई

इमारत खड़ी करना या सड़क बनवाना हमा लक्ष्य कभी नहीं रहा, इसलिये पैक कार्यक्रम के नतीजे इस रूप में दिखाई ना देते। यह कथन है मण्डला जिले के निवा विकासखण्ड में पैक्स कार्यक्रम संचालित क रही संस्था कामयाब युवा संस्कार समिति श्रीकांत चतुर्वेदी का। श्री चतुर्वेदी के अनुस ग्रामीण गरीबों में आत्मविश्वास जगाकर उ पैरों पर खड़ा हो जने लायक बनाना क ज्यादा महत्वपूर्ण है और पैक्स यही कर र है।

लेकिन दो साल बाद यानि 2008 मे पैक्स कार्यक्रम खत्म जायेगा, तब क्या हो छिंदवाड़ा जिलों के सोनपुर विकासखंड पैक्स कार्यक्रम संचालित करने वाली सं ग्राम कल्याण सेवा समिति के धुरंधर ब्रा का कहना है, कि ग्रामीण गरीबों और उ भी जो ज्यादा गरीब हैं, को उनकी ता उनके अधिकार और उनकी क्षमत के बारे में जागृत करने का र पैक्स ने कर दिखाया है और कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। ग्रामीणों में इतना विश्वास है, कि यह कार्यक्रम खत्म हो जाने के समय बाद भी वे अपनी लड़ाई खुद सकेंगे। यह आत्मविश्वास मायने रखता है

11 जून, रविवार, 2006, देशबन्धु